प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

इण्डियन सोसायटी फार वेटरनरी सर्जरी द्वारा तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारम्भ

पंतनगर। 24 फरवरी 2022। विश्वविद्यालय के पशु चिकित्सा एवं पशुपालन विभाग के डा. रतन सिंह सभागार में इण्डियन सोसायटी फार वेटरनरी सर्जरी द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका विषय 'रीसेंट ट्रेंड्स इन सर्जिकल एंड इमेजिंग टेक्निक्स फॉर एनहांसमेंट ऑफ़ प्रोडक्टिविटी एंड हेल्थ स्टेटस ऑफ़ फार्म एंड पेट एनिमल्स' था। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद दिल्ली के उप महानिदेशक, पशुविज्ञान, डा. बी.एन त्रिपाठी विशिष्ठ अतिथि निदेशक पशुपालन, उत्तराखण्ड सरकार, डा. प्रेम कुमार के साथ कुलसचिव, डा. ए.के. शुक्ला, अधिष्ठाता, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन, डा. एन.एस. जादौन, इण्डियन सोसायटी फार वेटरनरी सर्जरी के कार्यकारी सचिव, डा. डी.बी. पाटिल एवं इण्डियन सोसायटी फार वेटरनरी सर्जरी के अध्यक्ष, डा. एस.एस. सिंह मंचासीन थे।

डा. ए.के. शुक्ला ने सेमीनार में उपस्थित प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन करते हुए कहा कि आप हरित क्रांति की जन्म स्थली, पंतनगर में उपस्थित होकर स्वयं को गौरवांवित महसुस कर रहे होंगे। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय कृषि एवं पशुचिकित्सा के क्षेत्र में अपने शुरूआती दौर से ही प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि भारत में पशुओं की संख्या ज्यादा है इसलिए पशुचिकित्सकों का दायित्व और महत्व दोनों ही बढ़ जाता है। डा. शुक्ला ने बताया कि पशु और मनुष्यों का सीधा संबंध पारिस्थितिकी तंत्र से है अगर इसमें से एक भी प्रभावित होता है तो इसका सीधा असर पर्यावरण पर पडेगा।

डा. बी.एन. त्रिपाठी ने बताया कि पंतनगर विश्वविद्यालय के विद्यार्थी विश्व के किसी भी कोने में रहे वे पंतनगर को कभी नहीं भुला सकते। उन्होंने कहा कि सर्जरी तकनीक के उपरान्त चिकित्सा के क्षेत्र में अमूल परिवर्तन हुए है साथ ही सर्जरी के क्षेत्र में भी नई तकनीकों का समावेश हुआ है। डा. त्रिपाठी ने बताया कि पशुचिकित्सक की जिम्मेदारी अन्य चिकित्सकों की तुलना में अत्यधिक है क्योंकि वे उनका उपचार करते है जो अपनी दर्द को बता नहीं सकते। उन्होंने बताया कि कुक्कुट पालन की अपेक्षा बकरी एवं भेड़ पालन ज्यादा लाभदायक सह–व्यवसाय है, जिससे किसान अपनाकर अपनी आमदनी बढ़ा रहे हैं। उन्होंने पशुओं में लगने वाली बीमारियों और उससे होने वाले नुकसानों के बारे में भी बताया। डा. डी.बी. पाटिल ने इण्डियन सोसाइटी फार वेटरनरी सर्जरी के बारे में बताते हुए कहा कि यह सोसाइटी पशुचिकित्सा के क्षेत्र में 1977 से कार्यरत है। उन्होंने बताया कि भारत में पशुचिकित्सा सर्जरी को पुनर्जीवित करने में सोसाइटी ने बहुत बडा योगदान दिया है। डा. एस.एस. सिंह ने इण्डियन सोसाइटी फॉर वेटरनरी सर्जरी के द्वारा किये गये शोधों के बारे में बताया साथ ही पशुचिकित्सा के क्षेत्र में नव पशुचिकित्सकों के लिए रोजगार की संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में डा. एन.एस. जादौन ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम की रूप–रेखा बताई। कार्यक्रम के दौरान इण्डियन सोसाइटी फॉर वेटरनरी सर्जरी से संबंधित अधिकारियों को अतिथियों द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया तथा कार्यक्रम की स्मारिका का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम के अन्त में विभागाध्यक्ष सर्जरी एवं रेडोलॉजी, डा. ए.के. दास ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर देश के विभिन्न विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, पशुचिकित्सक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

कार्यक्रम की स्मारिका का विमोचन करते कुलसचिव, डा. ए.के. शुक्ला एवं अन्य